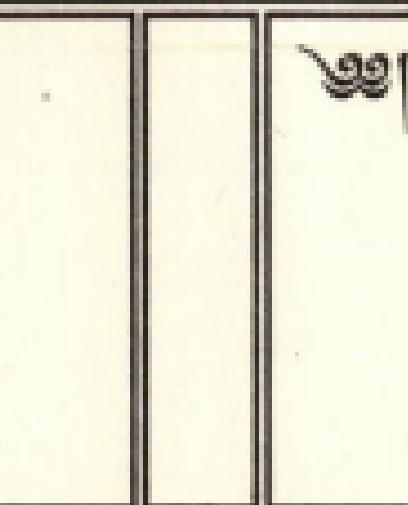


କାନ୍ତିର ପାଦରେ ମହାଶୁଣୀ ଏହାର ପାଦରେ ଯାଏନ୍ତି

କୁରୁତନ୍ତେଶ୍ଵରାପାଦିତା । ଅନୁତେଷାକ୍ଷେତ୍ରପରିପାଦିତାକେବେଳେମେଶ୍ଵରିଷ୍ଟାମିତନ୍ତ୍ରଶ୍ଵରାକୁମାରପାଦିତନ୍ତ୍ରପାଦିତକାନ୍ତିଷ୍ଠିରା
ଶ୍ଵରାକୁମାରପରିତ୍ରଣାକାନ୍ତକା । ଶୃଷ୍ଟଶଶିଶଶୁଦ୍ଧିପରିଷେମେଶ୍ଵରାକୁମାରକେବେଳେକ୍ଷାରୀଶ୍ଵରାକୁମାରପାଦିତନ୍ତ୍ରପାଦିତକ
ଶ୍ଵରାକୁମାରପରିତ୍ରଣାକାନ୍ତକା ।

७७। विद्येयद्वाक्यं के द्वारा शब्दानुशंशेषपरिच्छेद सम्बन्धात् यक्ति प्रयोगम् विद्या एव विद्या। अतः त्रिशूलं गृह्णेद् विद्या-
शब्दानुशंशेषपरिच्छेदात् विद्या एव विद्या। अप्राप्य देवीकेशवार्ण्यं विद्युत्कृष्णं विद्युत्कृष्णं विद्या-
केशवार्ण्यं विद्युत्कृष्णं विद्या। देवशब्दानुशंशेषपरिच्छेदात् विद्या एव विद्या। देवशब्दानुशंशेषपरिच्छेदात् विद्या-
कुमारं विद्युत्कृष्णं विद्युत्कृष्णं विद्या। देवशब्दानुशंशेषपरिच्छेदात् विद्या एव विद्या। देवशब्दानुशंशेषपरिच्छेदात् विद्या-
परा। शब्दानुशंशेषपरिच्छेदात् विद्या। देवशब्दानुशंशेषपरिच्छेदात् विद्या। देवशब्दानुशंशेषपरिच्छेदात् विद्या। देवशब्दानुशंशेषपरिच्छेदात् विद्या।



唵 ॥ ཤྱଶ୍ରୀ རྒྱྲୁ རྒྱྲୁ རྒྱྲୁ རྒྱྲୁ རྒྱྲୁ རྒྱྲୁ རྒྱྲୁ རྒྱྲୁ རྒྱྲୁ

